सम्पादकीय यह दीपज्योति की तरह जगमगाने की वेला है 2

महायज्ञ शृंखला राजस्थान और दिल्ली में नवसृजन के संकल्प उभारते विशाल कार्यक्रम

7

व्याख्यान : यज्ञ ही मानव को मानव बनाने का मार्ग है। **आचार्य देवव्रत जी, गुजरात के राज्यपाल**

8

8

आश्विन नवरात्र में श्रद्धेय कुलाधिपति जी के व्याख्यान : **गीता का उपदेश एवं गीता की महिमा**

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 नवम्बर 2024

वर्ष : 37, अंक : 09

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 अक्टूबर 2024

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

मार्गदर्शकों की भूमिका निभाएँ लोकसेवी

अध्यापक और मार्गदर्शक में मौलिक अंतर यह है कि अध्यापक बाहरी दुनिया से संबंधित जानकारियाँ कराते और छात्रों को बहुज्ञ बनाते हैं। बहुज्ञता कुशलता में गिनी जाती है और वह अर्थोपार्जन से लेकर बड़प्पन की पंक्ति में बिठाती है। परिवार एक प्रकार से अध्यापन कार्य ही करता है। भाषा ज्ञान, शिष्टाचार, शृंगार, विनोद, स्वभाव आदि की विशेषताएँ परिवार के लोगों से ही सीखी जाती हैं।

इसके बाद स्कूली अध्यापकों का कार्य शुरू होता है। उनका काम अक्षर ज्ञान, व्याकरण, गणित, इतिहास, भूगोल, ज्यामिति, शिल्प आदि सिखाना है। यों कहने को तो नैतिकशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान, जीव विज्ञान, वनस्पति शास्त्र, भौतिकी आदि विषय भी पढ़ाये जाते हैं, पर वे सभी विषय ऐसे होते हैं जो संग्रहित जानकारियों एवं प्रचलनों का ही बोध कराते हैं। भावना, आस्था, आकांक्षा, प्रेरणा, विचारणा, दूरदर्शिता, विवेकशीलता के ऐसे तत्त्व उसमें सम्मिलित नहीं होते, जिनसे व्यक्तित्व का स्तर उभरे, प्रतिभा निखरे और चिन्तन, चरित्र, व्यवहार में उत्कृष्टता, आदर्शवादिता का समावेश हो। यह विषय ऐसे भी नहीं हैं, जिन्हें किसी पुस्तक या पाठ को याद कर रटाने के साथ-साथ हृदयंगम भी कराया जा सके और व्यक्ति के व्यक्तित्त्व को किसी उच्चस्तरीय साँचे में ढाला जा सके। अतएव वर्तमान शिक्षा संस्थाओं तथा शिक्षकों से आशा भी नहीं की जाती कि वे अपने छात्रों को महापुरुष या देवपुरुष की पंक्ति में बिठा सकने की योग्यता प्रदर्शित कर सकेंगे। पुस्तकीय पढ़ाई और प्रमाण पत्रों के आधार पर कहीं नौकरी लगवा देना, व्यवसाय करते हुए रोजी रोटी के साधन जुटा लेना, आज की स्कूली शिक्षा का आदि और अंत यहीं हो जाता है।

अप्प दीपो भव

मार्गदर्शन का तात्पर्य उस रीति-नीति को अपनाये जाने से है, जिसके आधार पर क्या करना? क्यों करना? किसलिए करना? जैसे प्रश्नों का समाधान किया जाता हो। मार्गदर्शक की भूमिका निभाते समय सर्वप्रथम निजी जीवन में कुछ हेर-फेर करने पड़ते हैं। उस अभ्यस्त मार्ग से तनिक हटकर चलना पड़ता है, जिस पर जनसाधारण को अंधी भेड़ों के समूह की तरह दौड़ लगाते देखा जाता है। अपना निज का स्तर बदले बिना कोई व्यक्ति उस पदवी को प्राप्त नहीं कर सकता, जिसे 'मार्गदर्शक' या 'धर्मोपदेशक' नाम से जाना जाता है।

'अप्प दीपो भव' अर्थात तुम अपने दीपक स्वयं बनो, प्रकाशवान बनो। दूसरों को प्रकाश दिखाओ एवं स्वयं भी प्रकाशित होकर रहो। ऐसे व्यक्ति ही दूसरों को व्यक्तित्ववान, चरित्रवान, प्रतिभावान बना सकते हैं। सर्वतोमुखी प्रगति इसी तथ्य पर अवलम्बित है। दुर्भाग्यवश आज इन्हीं दीपकों की, प्रकाश स्तम्भों की कमी है। यह शून्यता समाज परिकर के विकास के लिए बड़ी हानिकारक है।

मार्गदर्शक वस्तुतः मानवीय गरिमा को गौरवान्वित करने वाला स्तर है। इसके लिए कोई रहस्यभरी, कौतूहलमयी विद्या नहीं अपनानी पड़ती।

सत्य और तथ्य को अपनाने भर से इस दिशा में प्रगतिक्रम चल पड़ता है। लोकशिक्षण का आरम्भ अपने आप से होता है। जिस शिक्षा को अपने को नहीं सिखाया जा सका, जिसे अपनी जीवनचर्या में स्थान नहीं मिल सका, उस शिक्षा से कथा, प्रवचनों के सहारे दूसरों को सहमत, तत्पर किया जा सकेगा, यह आशा नहीं ही करनी चाहिए।

लोकसेवी की जीवन शैली

भौतिक सुविधा-साधन, बड़प्पन का ठाट-बाट दिखाकर दर्शकों की आँखों में चकाचौंध उत्पन्न की जा सकती है, किन्तु उनसे ऐसा प्रभावी मार्गदर्शन नहीं किया जा सकता, जिसका अभिनन्दन हो और अनुकरण किया जा सके। इसके लिए न्यूनतम योग्यता आदर्शवादी चरित्रनिष्ठा को अपनाया जाना है। ऐसे लोगों के प्रति ही श्रद्धा उत्पन्न होती है, उनकी ही करनी को अपनाने की अन्तःप्रेरणा उठती है। मार्गदर्शक ऐसे ही व्यक्ति हो सकते हैं।

मार्गदर्शक की आर्थिक पवित्रता का महत्त्व सर्वोपरि है। आर्थिक पवित्रता का अर्थ चोरी, बेईमानी, ठगी आदि नहीं वरन् **'औसत नागरिक स्तर का जीवन'** है। इसी सूत्र में समूची ईमानदारी एकत्रित हो जाती है। जो औसत नागरिक से बढ़कर आहार-विहार की, शौकमौज की, ठाटबाट की, अहंकार की इच्छा नहीं करता, वह परिश्रम की कमाई से भली प्रकार पेट भर सकता है। उसे आर्थिक छल-प्रपंच करने की, शोषण, उत्पीड़न करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इतना ही नहीं, संयम की सहेली उदारता छाया की तरह साथ रहने पर यह भी बन पड़ेगा कि सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए समयदान, अंशदान के कुछ कहने योग्य अनुदान प्रस्तुत कर सकें। लीक से हट कर चल सकने का साहस अपनाते ही **'सादा जीवन उच्च विचार'** की परम्परा अपनानी पड़ती है। ईमानदारी का निर्वाह इससे कम में नहीं होता और उसके बिना वाणी में वह प्रभाव उत्पन्न नहीं होता, जो किसी को आदर्शवादिता अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर सके।

युग निर्माण की दिशाधारा

जिस मार्गदर्शन की आज आवश्यकता अनुभव की जा रही है, वह है निकृष्टता का निरस्तीकरण, दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन, भ्रष्ट चिन्तन एवं दुष्ट आचरण का निराकरण। इसी को दूसरे शब्दों में नैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान कहा जा सकता है। यही करने योग्य है। यही होना चाहिए। मनुष्य ने अपने को भीतर और बाहर की सड़ी कीचड़ से लपेट लिया है। इसी की धुलाई, सफाई होनी चाहिए। टूटे हुए धातुखण्डों की गलाई, ढलाई करके उसे ऐसे औजार-उपकरणों में बदला जाना चाहिए, जिससे उपयोगी प्रयोजन सध सकें। कष्ट पीड़ितों, गरीबों को रोटी, कपड़ा और बीमारों को दवाएँ बाँटकर उनकी सामयिक सहायता हो सकती है, पर सदा सर्वदा के लिए समाधान ढूँढ़ना है तो उन्हें स्वावलम्बी बनाने की स्थिति तक पहुँचाना होगा। इसमें साधनों की कम और साहस भरे प्रयासों की अधिक आवश्यकता पड़ती है। संक्षेप में यही है व्यक्ति निर्माण या जनमानस का परिष्कार, जिसे तत्परता के साथ प्राणपण से एकजुट होकर किया जाना चाहिए। यही है युग निर्माण योजना की, प्रज्ञा-अभियान की विचारणा एवं कार्य पद्धति। इसे विचारक्रान्ति अभियान या ज्ञानयज्ञ के रूप में भी जाना जाता है। इसे क्रियान्वित करने के लिए नैतिक क्रान्ति, बौद्धिक क्रान्ति एवं सामाजिक क्रान्ति का प्रज्वलन किया गया है। लाल मशाल इसी का प्रतीक प्रतिबिम्ब है।

जनसंपर्क ही है एकमात्र समाधान

इस मार्गदर्शन के लिए कोई विशाल भवन खड़े करने की आवश्यकता नहीं है। इसे जन सम्पर्क, जन समर्थन एवं जन सहयोग से ही सम्पन्न किया जा सकता है। इसके लिए घर-घर अलख जगाने और गाँव-गाँव धर्म प्रचार, आयोजन करने की पुरातन पद्धति को ही नये साधनों और नये कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न करना होगा। महामारी है, मरीज प्रान्त भर से इकट्ठे होकर एक अस्पताल में जुटें, इसकी अपेक्षा यही उचित है कि चिकित्सक गाँव-गाँव फेरी लगायें और जिन्हें मरीज पायें, उन्हें परहेज बतायें, औषधि खिलायें और जिस सेवा-सहायता की आवश्यकता है, उसका प्रबन्ध करें।

मार्गदर्शकों की आवश्यकता साधु, ब्राह्मण स्तर के चरित्रवान और सेवाभावी व्यक्ति ही पूरी कर सकते हैं। उनका अभाव दीखता तो है, पर वस्तुतः है नहीं। प्रज्ञा परिवार की सुसंस्कारी आत्माएँ आगे बढ़कर समय की इस पुकार को पूरा करने में समर्थ हो सकती हैं। वे महाकाल की चुनौती को अस्वीकार नहीं करेंगी।

अखण्ड ज्योति, सितम्बर 1986
से संकलित, सम्पादित

यह दीपज्योति की तरह जगमगाने की वेला है

जिन्हें अपने जीवन की दिव्यता का बोध है, वे भगवान के साथ साझेदारी में पीछे कैसे रह सकते हैं?

इतिहास की पुनरावृत्ति

14 वर्ष के वनवास के बाद भगवान श्रीराम रावण और उसके असुर साम्राज्य का अंत कर कार्तिक माह की अमावस्या के दिन अयोध्या लौटे। उस दिन पूरी अयोध्या नगरी दुल्हन की तरह सजाई गई, नयनाभिराम उत्सव मनाया गया। अयोध्या वासियों ने अपने घर के द्वार और अट्टालिकाओं पर दीपमालाएँ सजाईं। जैसे भगवान श्रीराम और उनकी वानर सेना असुरता का अंत करके लौटी थी, उसी प्रकार पूरी अयोध्या नगरी में जगमगाती दीपमालाएँ अमावस की रात की कालिमा को चुनौती दे रही थीं। उस दिन दीपावली पर्व मनाया जा रहा था।

सूर्यवंशी भगवान श्री राम स्वयं सूर्य के समान तेजस्वी, प्रकाशवान, ऊर्जावान हैं। वे सत्य, प्रेम, न्याय की प्रतिमूर्ति हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। जहाँ राम है, वहाँ असुरता और अंधकार का अंत सुनिश्चित है। जैसे ही भगवान राम का अयोध्या आगमन हुआ, अयोध्यावासियों के हृदय खिल उठे। उनके दिव्य प्रेम के स्पर्श की पुलकन से वियोग की वेदना, निराशा, हताशा समाप्त हो गई। हर किसी के मन में उमंग और उल्लास छा गया। उन दिनों देवताओं को अपने वश में रखने वाले रावण का अंत किसी के लिए भी अकल्पनीय था। जब प्रभु श्री राम उस अजेय असुर साम्राज्य का अंत करके लौटे तो उनके प्रति अयोध्यावासियों की श्रद्धा, निष्ठा हजारों गुना बढ़ गई। अयोध्या में जगमगाती दीपमालाएँ अवांछनीयताओं के अंत और सतयुग के आगमन का संदेश लेकर आई थीं।

आज इतिहास दोहराया जा रहा है। निःसंदेह इन दिनों चारों ओर निविड़ अंधकार का साम्राज्य दिखाई दे रहा हो, लेकिन भोर की अरुणिमा भी दस्तक दे रही है। भौतिकता के व्यामोह और युद्धोन्माद में गहरी डूबी दुनिया में चारों ओर भय, वैमनस्य, अत्याचार का तांडव ही दिखाई देता है, लेकिन दूसरी ओर 'निशिचर हीन करौं महि ...' संकल्प लेने वाले भगवान श्रीराम की वानर सेना की ही तरह इस युग के ऋषि श्रीराम की युग निर्माणी सेना अपने इष्ट के 'इक्कीसवीं सदी, उज्ज्वल भविष्य' के उद्घोष को चरितार्थ करने के लिए प्राणपन से सक्रिय है।

भगवान राम के युग में असुरता का अंत और रामराज्य की स्थापना बाद में हुई थी, उनके पहले स्नेहपूर्ण कृपानुदान तो उनके संघर्ष के साथी रहे और माता सीता की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तत्पर रीछ-वानर और गिद्ध-गिलहरियों को मिले थे। रामराज्य का उत्सव तो हजारों, लाखों लोगों ने मनाया होगा, लेकिन अपने इष्ट, आराध्य के प्रति निश्छल प्रेम और समर्पण के भाव की दिव्य दीपज्योति इन्हीं लीला सहचरों के अंतःकरण में सर्वप्रथम प्रकाशित हुई थी।

इस युग में भी प्रज्ञावतार परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के वे लाखों शिष्य-अनुयायी बड़े सौभाग्यशाली हैं, जिनके अंतःकरण में मानवीय गरिमा के अनुरूप लोकमंगल की भावनाएँ हिलोरें ले रही हैं। परम पूज्य गुरुदेव के ये लीला सहचर भौतिकता के व्यामोह से अप्रभावित रहकर अपने गुरुदेव की ब्राह्मणोचित जीवन शैली का अनुसरण कर रहे हैं। इस युग में उपदेशक बहुत हैं, बड़े-बड़े दानदाताओं की कमी नहीं है, लेकिन युग की पुकार सुनकर लोकमंगल के लिए समयदान और अंशदान का व्रत निभाने वाले ही सच्चे युग निर्माणी कहे जा सकते हैं। यह दीपावली उन्हें उनके कर्त्तव्यों का पुनः स्मरण कराने आई है।

ज्योति पर्व पर आह्वान

दीपावली पर्व हर वर्ष मनाया जाता है। विजयादशमी के दिन रावण, कुंभकरण और मेघनाद के पुतलों के दहन की परम्परा सदियों से चली आ रही है। देश में रामलीला के हजारों बड़े-बड़े उत्सव होते हैं। हर मंदिर में, हर घर में भगवान राम और हनुमान की पूजा होती है, फिर भी जनमानस में भगवान राम के आदर्शों की प्रतिष्ठा की जो आशा की जाती है, वह पूरी होती दिखाई नहीं देती।

इस युग में असुरता का आतंक सुरसा के मुख की तरह निरंतर बढ़ता दिखाई दे रहा है। नशा, आलस्य, कामुकता, झूठी शान जैसी अवांछनीयताएँ व्यक्तिगत जीवन को खोखला कर रही हैं, तो सामाजिक जीवन में इन दिनों आसुरी शक्तियाँ संस्कृति की सीता के अपहरण के लिए घात लगाए बैठी हैं। जातिगत भेदभाव और परस्पर द्वेषभाव को बढ़ावा देने के लिए न जाने कितने कुचक्र रचे जा रहे हैं। स्वार्थवादी राजनीति में कुछ जयचंद ऐसे भी हैं जो राष्ट्र की बर्बादी की राह पर चल पड़े हैं। धार्मिक कट्टरता सब कुछ तहस-नहस कर देना चाहती है। अपमान और अत्याचार के घूँट पी रही नारी की रक्षा के लिए हनुमान के भक्त आगे आते दिखाई नहीं देते। ऐसी तमाम विसंगतियों और विपरीतताओं के घोर अंधकार में मानवता उन दीपज्योतियों को तलाश रही है, जो उसे अवांछनीयताओं से मुक्ति दिला सके, सत्पथ पर चला सके।

जन्मशताब्दी वर्ष-2026

युग निर्माण आन्दोलन अपने ऐतिहासिक पड़ाव पर है। पूरे देश में निकल रही ज्योति कलश यात्राओं के साथ अखण्ड दीप के प्राकट्य और परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी-सन् 2026 के कार्यक्रमों का शुभारंभ हो चुका है। यह समाज में हर वर्ग के, हर वय के, हर भाषा, हर प्रान्त के नर-नारी में परम पूज्य गुरुदेव के विचारों और उनके जीवन-आदर्शों को प्रतिष्ठित करने की वेला है। इनके प्रकाश में तमाम अवांछनीयताओं का समाधान निहित है।

निःसंदेह विजयादशमी, दीपावली जैसे पर्व-त्यौहारों का उद्देश्य जनमानस में नवचेतना जगाना ही है, लेकिन वर्तमान युग में आधुनिकता के अभिशाप एवं सच्चे पुरोहितों के अभाव में ये लोकशिक्षण नहीं, लोकरंजन के साधन ही अधिक दिखाई देते हैं। ऐसे में युग परिवर्तन के विराट संकल्प के साथ जुड़ी देवात्माओं को स्वयं जागना और दुनिया को जगाना होगा। यह मात्र दीपक और दीपमालाएँ जलाने की ही नहीं, स्वयं दीपज्योति की तरह जगमगाने की वेला है।

दीपज्योति बनकर जगमगाएँ

'दीपक' अपने आप में एक दर्शन है। भारतीय संस्कृति में दीपक को ज्ञान का, पवित्रता का, प्रखरता का, ऊर्ध्वमुखी चेतना का प्रतीक माना जाता है। इसीलिए ज्ञान सभाओं का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से किया जाता है। अज्ञान से ही सारी कष्ट, कठिनाइयाँ, समस्याएँ जन्म लेती हैं। जैसे दीपक के जलने से अंधकार तिरोहित हो जाता है, उसी प्रकार ज्ञान के उदय से समस्त समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं। समय की माँग है कि सर्वप्रथम हम स्वयं ज्ञान-साधना से अपने जीवन को इस तरह प्रकाशित करें कि पूरा समाज उससे प्रेरणा प्राप्त कर सके।

हम स्वयं को जानें

गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं :-

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति। 4/38

अर्थात् इस संसार में दिव्य ज्ञान के समान पवित्र करने वाला कुछ भी नहीं है। जिसने योग के दीर्घकालीन अभ्यास से मन की पवित्रता प्राप्त कर ली है, उसे समय आने पर हृदय में ऐसा ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

आज संसार में ज्ञान का जखीरा भरा पड़ा है, फिर भी समस्याओं का अंबार लगा है। यहाँ चर्चा सांसारिक ज्ञान की नहीं है, उस 'दिव्य ज्ञान' की है जिसकी साधना से जीवन में देवत्व उभरता जाता है, वह निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होता जाता है। यहाँ प्रसंगानुसार अपने विषय में सीधी-सी बात कही जाए तो हमें अपने इष्ट के प्रति समर्पण, विसर्जन की योग साधना सतत करनी चाहिए। इस साधना से जब आत्मबोध होने लगता है तो व्यक्ति तुच्छ सांसारिक प्रयोजन के लिए जीने की बजाय भगवान का सहयोगी बनने में गौरव अनुभव करने लगता है।

हम सामान्य नहीं हैं, यह बोध हमारे जीवन में अंतःकरण की गहराई तक प्रवेश कर जाना चाहिए। सुरदुर्लभ मानव जीवन की प्राप्ति से भी बड़ी बात यह है कि परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन में भागीदारी का, महाकाल के साथ साझेदारी का जो सौभाग्य हमें मिल रहा है, वह अत्यंत दुर्लभ है। गीता के उपरोक्त श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को ऐसे ही दिव्य संयोग का बोध कराकर उनके व्यामोह को नष्ट कर युगधर्म निभाने की प्रेरणा दे रहे हैं। इस योग के दीर्घकालीन सतत अभ्यास से मन पवित्र और जीवन ज्योतित हो जाता है।

आज युगधर्म के पालन की राह में अनेक अवरोध खड़े हो जाते हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, नौकरी, पेशे, रोजगार की बंदिशें भी हैं, लेकिन सबसे बड़ी बाधा अपना कमजोर मन, अपना आलस्य, सुविधा सम्पन्न और विलासितापूर्ण जीवन जीने की आकांक्षा आदि ही हैं। इन्हें समस्याएँ नहीं, मन की परीक्षाएँ कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यदि भगवान राम और भगवान कृष्ण के सदृश परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के दिव्य स्वरूप और उसके साथ अपने संबंधों का बोध हमें हो जाए, तो फिर जीवन की दिशाधारा ही बदल जाएगी। गेहूँ और धान के बीज लाखों, करोड़ों में होते हैं, लेकिन उनमें से कुछ ही ऐसे होते हैं, जिन्हें जमीन में गलकर पुनः अपने ही समान नए बीज तैयार करने का अवसर मिलता है, शेष तो पिसते हैं या सड़कर नष्ट हो जाते हैं। हमें यही निश्चय करना है कि भगवान की सत्ता से जुड़कर उनकी इच्छा और योजना के अनुरूप दिव्य ज्योतित जीवन जीना है अथवा जनसामान्य की तरह खाओ, पीओ, मौज करो की नीति पर चलते हुए जीवन के सौभाग्य को निरर्थक ही गँवा देना है।

आज युग देवता को इस सौभाग्य को पहचानने वाले उन लाखों ज्योतित जीवनों की आवश्यकता है, जो अपनी दिव्यता की आभा से समाज का पथ प्रदर्शन करते हुए सतयुगी समाज के निर्माण में भागीदारी कर सकें।

जीवन दीप

दीपक की बुनियादी आवश्यकताएँ हैं-पात्रता, निरंतर जलते रहने के लिए स्निग्धता, बाती और उसे प्रज्वलित कर सके, ऐसा स्पर्श।

मनुष्य जीवन को परमात्मा का सर्वोत्तम उपहार इसलिए कहा जाता है कि अन्य प्राणियों को तो उसने पेट-प्रजनन तक का सीमित जीवन जीने की सामर्थ्य प्रदान की है, लेकिन अपनी ज्ञान-साधना, संकल्प और प्रयासों के आधार पर जितना चाहे अपनी पात्रता को बढ़ाते हुए महामानवों और देव पुरुषों की तरह उत्कृष्टता की ओर बढ़ा जा सकता है। अपने तपस्वी, तेजोमय जीवन के बल पर वह स्वयं तो स्वर्ग, मुक्ति जैसी सिद्धियाँ और दिव्य आनन्द की प्राप्ति कर ही सकता है, अपने क्षेत्र के अनन्त लोगों को भी सन्मार्ग की ओर प्रेरित कर सकता है, जिसका अक्षय पुण्यलाभ मानव जीवन को सफल और सार्थक बनाता है।

दीपक की तरह प्रकाशित और परमार्थपरायण जीवन जीने के लिए दिव्य ज्ञान की साधना आवश्यक हो जाती है। मनुष्य को ज्ञान साधना से जैसे-जैसे अपने जीवन की गरिमा और उसके उद्देश्य का बोध होता जाता है, वैसे-वैसे उसके अंदर सत्संकल्पों की बाती तैयार होती है। परमात्मचेतना का दिव्य स्पर्श उसे प्रज्वलित, प्रकाशित करता है। उच्च उद्देश्यों और आदर्शों के प्रति श्रद्धा और परमात्मा के दिव्य संरक्षण, अनुदानों के प्रति विश्वास के साथ ईश्वर के प्रति अनुराग ही वह स्निग्धता है, जो उसे सतत जलते रहने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं।

हमारा परम सौभाग्य है कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के क्रान्तिकारी विचार, उनके अनुग्रह-अनुदान हमारी ज्ञान साधना को सरल बना रहे हैं, वरना कठिन तपश्चर्या से ही यह सौभाग्य प्राप्त हो पाता है। उनका कृपापूर्ण संरक्षण हमारे जीवन दीप को युग के प्रचंड झंझावातों से बचा रहा है। इस परम सौभाग्य का हम सबको लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

क्या करें?

- अपने सांसारिक व्यामोह के बंधन ढीले कर परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण के विराट संकल्प के साथ जुड़ें, अपने जीवन लक्ष्य को बड़ा करें।
- परम पूज्य गुरुदेव की दिव्य चेतना से अपना संपर्क निरंतर बनाये रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग का नियमित क्रम अपनायें।
- पवित्र, प्रामाणिक, प्रखर, चरित्रनिष्ठ, भाव संवेदनाओं से ओतप्रोत परमार्थपरायण ऐसी आदर्श जीवन शैली को अपनायें, जो औरों को भी सहज ही अनुकरण के लिए प्रेरित करे।
- युग संकट से मानवता को मुक्ति दिलाने के लिए परम पूज्य गुरुदेव ने जो अभियान चलाया है, उसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए अपनी प्रतिभा, समय, साधनों का अधिक से अधिक उपयोग करें।

सशक्त हो रहा है अखिल विश्व गायत्री परिवार का नशामुक्त भारत अभियान

म.प्र. में मद्य निषेध सप्ताह, गायत्री परिवार ने नेतृत्व किया

मद्य निषेध सप्ताह को सफल बनाने में भागीदारी का संकल्प दिलाते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जगदीश कुल्मी

गायत्री परिवार एवं विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के लगभग 350 कार्यकर्त्ताओं ने मद्य निषेध अभियान में योगदान देने हेतु संकल्प लिए।

भोपाल। मध्य प्रदेश : महात्मा गाँधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री की जयंती के पावन अवसर पर मध्य प्रदेश में मद्य निषेध सप्ताह मनाया गया। भोपाल में 2 अक्टूबर को सामाजिक न्याय विभाग, दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग एवं गायत्री परिवार भोपाल के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नशा भारत छोड़ो' नारे के साथ प्रदेशव्यापी अभियान का शुभारंभ हुआ। गायत्री शक्तिपीठ भोपाल पर आयोजित इस कार्यक्रम में मध्य जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जगदीश कुल्मी, भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय, गायत्री परिवार के मध्य प्रदेश जोन समन्वयक श्री राजेश पटेल उपस्थित रहे।

महापौर श्रीमती मालती राय ने नशे की बुराई से पीछा छुड़ाने के लिए अच्छे कामों में तन्मयता के साथ जुट जाने, जैसे कि गली-मोहल्ले के मंदिरों में सुबह-शाम आरती में शामिल होना, नगर को स्वच्छ बनाने में अपना योगदान देना आदि प्रेरणाएँ दीं।

श्री आर. के सिंह, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तीकरण संभाग भोपाल ने मध्य प्रदेश शासन के द्वारा नशा मुक्ति के लिए चलाये जा रहे प्रशिक्षण एवं अन्य अभियानों की जानकारी दी।

श्री अरुण सक्सेना ने नशे से होने वाली हानियों को मूक अभिनय के माध्यम से बखूबी प्रस्तुत किया।

गायत्री परिवार ने नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आकर्षक प्रदर्शनी लगाई थी। इसमें इस बुरी लत से बचने और पीछा छुड़ाने के प्रभावशाली उपाय के रूप में गायत्री उपासना, साधना को दर्शाया गया था।

मद्य निषेध सप्ताह के उद्घाटन समारोह में धार्मिक संस्था प्रजापिता ब्रह्मकुमारी की दीदी बी.के. नीता सहित कई समाजसेवी संस्थाओं के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संयोजन श्री रमेश नागर ने किया।

सक्रियता का कीर्तिमान रचा

श्री जगदीश कुल्मी जी ने गायत्री परिवार की सक्रियता का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि भारत सरकार के पोर्टल पर नशा विरोधी अभियान में गायत्री परिवार की सबसे अधिक भागीदारी है। पिछले वर्ष गायत्री परिवार ने मध्य प्रदेश के 55 जिलों की 402 तहसीलों की 21,151 ग्राम पंचायतों के 54,145 ग्रामों में जनसम्पर्क अभियान चलाकर लाखों लोगों को जागरूक किया और नशामुक्ति के संकल्प दिलाए हैं।

धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार दानी टोला इकाई गोकुलपुर धमतरी ने स्थानीय निवासियों के साथ मिलकर 29 सितम्बर को नशा उन्मूलन रैली निकाली। इसके समापन पर एक सभा हुई, जिसमें श्री गजानन साहू तथा श्री कौशल प्रसाद ने तरह-तरह के नशों से मन-मस्तिष्क पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को विस्तार से बताया। प्रज्ञा गीतों और उत्साहभरे नारों के संयोग से यह कार्यक्रम बहुत ही प्रभावशाली सिद्ध हुआ। लोगों ने इस अभियान को गति देने में अपने पूरे-पूरे सहयोग का आश्वासन दिया।

नशासुर के विरुद्ध आवाज बुलंद करते कार्यकर्त्ता एवं बच्चे

जब देश की आधी कमाई नशे पर बर्बाद हो रही हो, तो विकसित राष्ट्र का सपना कैसे सच होगा?

देवास। मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में गाँधी जयन्ती के अवसर पर 2 से 8 अक्टूबर 2024 तक की तिथियों में मनाए जा रहे नशामुक्ति सप्ताह के अंतर्गत भागीदारी करते हुए गायत्री परिवार की देवास शाखा ने गायत्री शक्तिपीठ से लेकर गजरा गेट चौराहा, चामुंडा नगर, कृष्णा नगर, आदर्श नगर से लगती हुई कॉलोनियों में नशामुक्ति रैली निकाली, जिसका समापन गायत्री शक्तिपीठ पर आकर हुआ। गायत्री शक्तिपीठ द्वारा संचालित बाल संस्कारशाला के बच्चों ने इसमें भाग लेते हुए बड़े जोश और उल्लास के साथ व्यसनमुक्ति के नारे लगाये। इन नन्हें मुन्नों के हाथों में नशाबंदी संबंधी वाक्यों की तख्तियों ने आमजनों को बहुत प्रभावित किया।

युवा प्रकोष्ठ के जिला समन्वयक श्री प्रमोद निहाले और वरिष्ठ जन श्री सुभाष जैन ने आमजनों से देश के एक अच्छे और जिम्मेदार नागरिक के रूप में समाज में व्याप्त नशे रूपी महामारी को मिटाने में अग्रणी भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने पूछा कि जब देश की आधी कमाई नशे पर बर्बाद हो रही हो तो हम सभ्य, सुशिक्षित विकसित राष्ट्र का स्वप्न देखने वाले वीर बलिदानियों की आशा-आकांक्षाओं पर कैसे खरा उतर पाएँगे?

इस नशा मुक्ति रैली में सर्वश्री कांतिलाल पटेल, लक्ष्मण पटेल, राजेंद्र मुकाती, देवकरण कुमावत, मंजू पटेल, दिलीप सोलंकी, टीना सोलंकी, हजारीलाल चौहान, सालिग्राम सकलेचा, सुरेंद्र दुबे का विशेष योगदान रहा।

अमलतास अस्पताल में नशामुक्ति का संकल्प

देवास शाखा ने नगर से 10 किलोमीटर दूर अमलतास अस्पताल में नशाबंदी कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें कई युवाओं ने नशे से दूरी बनाने का संकल्प लिया। गायत्री परिवार के परिजनों ने कार्यक्रम में उपस्थित युवाओं को नशे की लत छुड़ाने तथा उससे बचने के लिए बड़े महत्त्वपूर्ण सूत्र बताए।

श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव और प्रभा पोतदार ने कहा कि गायत्री मंत्र किसी धर्म विशेष का मंत्र नहीं है, यह आत्मबल बढ़ाने वाला और सद्बुद्धि जगाने वाला मंत्र है। आप गायत्री मंत्र का प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक जप करते हैं तो यह आपको नशे की लत छुड़ाने में बहुत मदद देगा।

विद्यार्थियों में जागरूकता बढ़ाने के प्रशंसनीय प्रयास

खिलचीपुर, राजगढ़। मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में 2 से 8 अक्टूबर की तिथियों में व्यसनमुक्त भारत सप्ताह मनाया गया। गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर ने इस उपलक्ष्य में उत्कृष्ट उच्च माध्यमिक विद्यालय खिलचीपुर में जागरूकतापरक कार्यक्रम आयोजित कर कक्षा 9 से 12 तक के 322 विद्यार्थियों को नशामुक्त और संस्कारयुक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर के व्यवस्थापक श्री कन्हैयालाल शर्मा तथा परिव्राजक श्री सुनील शर्मा ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने बच्चों को बताया कि व्यसन मित्र के रूप में हमारे जीवन में घुसते हैं और शत्रु बनकर हमें मार डालते हैं। अतः समय पर चेतने और उनसे दूर रहने की आवश्यकता है। बच्चों को नशे के दुष्प्रभाव, नशे से बचने के उपाय तथा स्वच्छता संबंधी जानकारियाँ भी दी गईं। विद्यालय के प्राचार्य एवं शिक्षकों ने भी इस कार्यक्रम की बहुत सराहना की।

गायत्री परिवार के प्रयासों से उत्साहित शिक्षक, विद्यार्थी

रैली ने दिया नशामुक्ति का संदेश

बिलासपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार और युवा संगठन 'दिया' ने विजयादशमी के उपलक्ष्य में नगर में नशामुक्ति रैली निकाली। पोस्टर, बैनर और आकर्षक झाँकियों से सुसज्जित यह रैली गायत्री शक्तिपीठ विनोबानगर से सीएमडी चौक तक निकाली गई। इस अवसर पर जिला समन्वयक नंदिनी पाटनवार ने युवाओं को राष्ट्र की अमूल्य निधि बताया। उन्होंने कहा कि हमारी युवा पीढ़ी को नशे के चंगुल से बचाना अत्यंत पुण्यदायी कार्य है, यह राष्ट्रधर्म है।

जिला संयोजक आशुतोष यादव, अक्षय पाटनवार तथा नन्हीं-सी आद्या यादव ने लघु नाटिका प्रस्तुत करते हुए समाज को मार्मिक संदेश दिया।

कैंसर के मरीजों के हितार्थ यज्ञ

मरीजों को मंत्रलेखन की प्रेरणा दी

मुम्बई। महाराष्ट्र : गायत्री परिवार मुंबई ने श्राद्ध पक्ष के अंतर्गत 29 सितम्बर 2024 को सायन कोलीवाड़ा स्थित विश्व हिंदू परिषद के कैंसर होस्टल में पंच कुण्डीय गायत्री यज्ञ का आयोजन किया। यह यज्ञ शान्तिकुञ्ज द्वारा कैंसर के उपचार में लाभदायी विशेष सामग्री का उपयोग करते हुए किया गया। परिजनों ने मरीजों के स्वास्थ्य लाभ के लिए विशेष आहुतियाँ दीं, प्रार्थना की। यज्ञोपरांत सभी को भोजन भी कराया गया।

गायत्री परिवार ने मरीजों का मनोबल बढ़ाते हुए नियमित गायत्री उपासना के लिए प्रेरित किया। सभी को मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ और 'हारिये न हिम्मत' जेबी पुस्तिकाएँ दी गईं।

डेंगू से बचाव संबंधी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ

बर्तनों का पानी बदलना ही नहीं, उन्हें रगड़कर साफ करना आवश्यक है।
एक से डेढ़ वर्ष तक सक्रिय रहता है डेंगू के मच्छर का अंडा

डेंगू के बढ़ते संक्रमण से बचाव के उपाय समझाने के लिए चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग जनपद हरिद्वार के विशेषज्ञों का एक दल शान्तिकुञ्ज आया। दल की सदस्य डॉ. उषा बिष्ट एवं स्वास्थ्य निरीक्षक डॉ. चंद्रमोहन कंसवाल ने पावर पॉइंट के सहारे डेंगू और उससे बचाव के उपाय बड़ी सरल भाषा में समझाये और अत्यंत महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। जैसे-

- डेंगू एडीज़ नामक मादा मच्छर के काटने से होता है। मच्छर के काटने के 7 से 12 दिन के भीतर डेंगू के लक्षण प्रकट होते हैं।
- यह मच्छर पर्दे के पीछे, पलंग, कुर्सियों या अन्य अंधेरे वाले स्थानों में जाकर छिप जाते है। अतः उड़ने वाले मच्छरों की बजाय इन छिपे मच्छरों से सावधान रहने और उन्हें नष्ट करने की अधिक आवश्यकता है।
- डेंगू का मच्छर साफ और ठहरे हुए पानी में अंडे देता है, बहते जल में नहीं। गंदे स्थानों पर भी यदि ऊपर स्वच्छ जल का आवरण जमा है तो वहाँ भी डेंगू का मच्छर अण्डे देता है। डेंगू से बचना है तो गमले, बर्तन, पानी की टंकी, पुराने टायर, कूलर, फ्रिज के पीछे की ट्रे आदि का जल कम से कम हर सप्ताह अवश्य बदलें, उन्हें रगड़कर साफ करें, धूप में सुखाएँ और फिर प्रयोग करें। खुले स्थानों में पड़े डिस्पोजेबल बर्तन, उपयोग में किए गए नारियल के खोल इत्यादि को हटा दें या उलटा कर दें, ताकि उनमें पानी जमा न हो सके।

विशेष ज्ञातव्य :

डेंगू के अंडे चिपचिपे होते हैं। वह पानी खाली करने के बाद भी बर्तन की सतह पर चिपके रहते हैं। वह एक से डेढ़ वर्ष तक सक्रिय रहते हैं और पुनः पानी के संपर्क में आते ही अंडे से लार्वा, प्यूपा और फिर मच्छर के रूप में विकसित हो जाते हैं। मानो इस वर्ष गर्मी समाप्त होने पर कूलर से पानी निकाल कर रख दिया गया। यदि उसमें डेंगू मच्छर के अंडे चिपके हैं और उन्हें रगड़कर हटाए नहीं गए हैं तो उस कूलर में अगले वर्ष जब पानी भरेंगे तो वे अंडे मच्छर के रूप में विकसित हो जाएँगे।

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

नवचेतना विस्तार के लिए बढ़ते प्रगतिशील चरण

प्रतिवर्ष एक तालाब को पुनर्जीवित करने का संकल्प उभरा

हर वर्ष विकसित किए जा रहे हैं पीपल के 101 पेड़

युवा सम्मेलन

टहरौली, झाँसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ टहरौली में दिनांक 25 सितम्बर को युवा सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें गुरसराय तहसील ही नहीं, झाँसी और आसपास के जिलों के कर्मठ युवाओं ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। उल्लेखनीय है कि गुरसराय तहसील के लगभग 200 कार्यकर्त्ता पूरी निष्ठा के साथ मिशन के रचनात्मक आन्दोलनों को गति दे रहे हैं। उनके द्वारा विगत 5 वर्षों से प्रतिवर्ष 101 पीपल के पेड़ लगाए जा रहे हैं और ट्री-गार्ड सहित उनके पोषण, संरक्षण की पूरी व्यवस्था की जा रही है।

टहरौली में आयोजित सम्मेलन में एक नया संकल्प उभरा। तद्नुसार प्रतिवर्ष तहसील के एक ऐसे तालाब को पुनर्जीवित किया जाएगा, जो पिछले 30-40 वर्षों से सूखा पड़ा है।

युवा सम्मेलन के संचालन हेतु शान्तिकुञ्ज से युवा प्रकोष्ठ समन्वयक श्री केदार प्रसाद दुबे, श्री आशीष सिंह और श्री ओंकार पाटीदार के नेतृत्व में युग गायकों की टोली पहुँची थी।

श्री के.पी. दुबे जी ने भारत के युवाओं के गौरवशाली इतिहास और उनके सामर्थ्य का बोध कराते हुए उपस्थित युवाओं को राष्ट्र के पुनर्जागरण और सम्यक विकास के लिए महारानी झाँसी, मंगल पाण्डे, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद जैसे सर्वस्व बलिदानियों को अपना आदर्श मानने की प्रेरणा दी। उन्होंने नशामुक्ति, वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रमों को गति देते हुए समाजसेवा के लिए प्रेरित किया।

श्री आशीष सिंह ने मानव जीवन की गरिमा याद दिलाते हुए अपनी शक्तियों को लोकमंगल के कार्यों में लगाने की प्रेरणा दी। इससे पूर्व कुमारी आस्था राजा बुंदेला ने गायत्री मंत्र की महिमा बताई।

इस कार्यक्रम में श्री हरगोविंद कुशवाहा राज्यमंत्री, विधायक श्री बाबूलाल तिवारी, बबीना विधायक राजीव सिंह परीछा, गरौठा राष्ट्रीय मानवाधिकार राष्ट्रीय प्रभारी सतीश चौरसिया आदि अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

युवाओं को आकर्षित करता रहा अभूतपूर्व पुस्तक मेला

20,000 युवाओं की उत्साहवर्धक भागीदारी

हर समय विद्यार्थियों और युवाओं से गुलजार रहा छत्रपति संभाजी नगर का पुस्तक मेला

छत्रपति संभाजी नगर। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार मराठवाड़ा की छत्रपति संभाजी नगर शाखा ने युवाओं में सत्साहित्य के प्रति रुचि जगाने के लिए चार दिवसीय युग साहित्य पुस्तक मेले का आयोजन किया। नगर के त्रिमूर्ति चौक, बालाजी नगर स्थित सिद्धि विनायक मंदिर परिसर में आयोजित इस पुस्तक मेले में वैसे तो सभी आयु, वर्ग के पाठकों ने भरपूर रुचि ली, लेकिन लगभग 20,000 युवाओं की भागीदारी ने आयोजकों के प्रयासों को विशेष रूप से सफल सिद्ध किया।

शिक्षण एवं कोचिंग संस्थानों का उत्साह

गायत्री परिवार मराठवाड़ा के समन्वयक श्री राजेश टांक ने बताया कि शिक्षण संस्थानों तथा कोचिंग संस्थानों ने विशेष रुचि ली। वे समूहबद्ध होकर अपने विद्यार्थियों को पुस्तक मेले में लाए और उन्हें नैतिक, चारित्रिक निर्माण के लिए परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। अनेक विद्यार्थी अपने अभिभावकों के साथ पुस्तक मेले में आए।

ब्रिगेडियर और कर्नल ने बतायी उपयोगिता

पुस्तक मेले का उद्घाटन 25 सितम्बर को माननीय ब्रिगेडियर वीरेन्द्र सिंह, कमांडेण्ट, 97 आर्टिलरी ब्रिगेड ने किया। इस अवसर पर उन्होंने युवाओं की रुचि के अनुरूप विषयों के प्रदर्शन और वातावरण तैयार करने के लिए आयोजकों की प्रशंसा की। पूज्य गुरुदेव के विचारों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि मानवीय उत्कृष्टता प्रदान करने वाला यह साहित्य सही मायनों में भारतीय संस्कृति का दर्पण है। पू. गुरुदेव के विचारों को पढ़ने के लिए सशक्त अभियान चलाये जाने की आवश्यकता है।

कर्नल निर्देश शाह, 136 इन्फेण्ट्री बटालियान (टीए) इस समारोह में विशेष रूप से उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि वे सेना द्वारा वृक्षारोपण अभियान में गायत्री चेतना केन्द्र संभाजी नगर की उत्कृष्ट भागीदारी के लिये गायत्री परिवार के बहुत प्रशंसक रहे हैं। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार पर्यावरण संरक्षण के लिए ही नहीं, युवा पीढ़ी के व्यक्तित्व निर्माण के लिए भी जिस उत्साह के साथ काम कर रहा है, वह स्तुत्य है।

हर युवा को दिया गया निःशुल्क साहित्य सेट

श्री राजेश टांक ने बताया कि पुस्तक मेले में आने वाले सभी 20,000 युवाओं को 20 रुपये का साहित्य सेट निःशुल्क भेंट किया गया।

पुस्तक मेला इतना लोकप्रिय रहा कि आरंभ करने का समय प्रातः 11 बजे से बदलकर प्रातः 8 बजे कर देना पड़ा था।

अण्डमान निकोबार में स्वतंत्रता सैनिकों का श्राद्ध-तर्पण

विजय नगर द्वीपसमूह

अब श्री विजय नगर के नाम से जाना जाने वाले अण्डमान निकोबार की सेल्यूलर जेल देशभक्त वीर सावरकर जी सहित देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले महावीरों की दिल दहला देने वाली यातनाओं की साक्षी है। गायत्री परिवार श्री विजय नगर (अण्डमान निकोबार) विगत 10 वर्षों से उन देवात्माओं की आत्म शान्ति के लिए श्राद्ध पक्ष में सामूहिक श्राद्ध तर्पण संस्कार का आयोजन करता आ रहा है। इस वर्ष वहाँ पितृमोक्ष अमावस्या, 2 अक्टूबर को 11 कुंडीय गायत्री यज्ञ एवं सामूहिक श्राद्ध तर्पण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम जनमानस में राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने वाला था। इसका शुभारंभ 500 बहिनों की भागीदारी वाली विशाल कलश यात्रा से हुआ। यह मंगल कलश शोभायात्रा राधाकृष्ण मंदिर से कार्यक्रम स्थल तक निकाली गई। श्राद्ध तर्पण संस्कार में पूरे द्वीपसमूह से लगभग 370 लोग शामिल हुए। उन्होंने अपने पितरों के साथ स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहे वीर बलिदानियों को भी जलाञ्जलि अर्पित की।

कार्यक्रम को शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री आशीष सिंह और श्री मंगलसिंह गढ़वाल की टोली ने सम्पन्न कराया। इसमें शहर के गणमान्य व्यक्तियों, धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं का भरपूर सहयोग मिला।

युवा एवं विद्यार्थियों को प्रेरणा

शान्तिकुञ्ज की टोली ने अपने दस दिवसीय प्रवास में सघन जनसंपर्क कर नगर के गणमान्य नागरिकों तक मिशन का संदेश पहुँचाया। दिनांक 5 अक्टूबर को भीमराव अंबेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी के छात्रों के बीच एक कार्यशाला आयोजित हुई, जिसमें छात्रों को व्यसनमुक्त और आदर्श जीवन के सूत्र सिखाए गए।

6 अक्टूबर को गायत्री चेतना केंद्र में पारिवारिक युवा शिविर का आयोजन कर गायत्री परिवार के बच्चों को मिशन की गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाने की प्रेरणा दी। संस्कार शाला के संचालकों और विद्यार्थियों की माताओं के बीच भी एक गोष्ठी की गई।

पूर्वोत्तर राज्यों में ज्योति कलश यात्रा का भव्य स्वागत

ग्वालपारा। असम : दिनांक 26 और 27 सितंबर 2024 को ग्वालपारा से पूर्वोत्तर राज्यों में ज्योति कलश यात्रा का भव्य शुभारंभ हुआ। पूर्वोत्तर जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री मृणाल कांत शर्मा ने बताया कि जिले के श्री सूर्य पहाड़ क्षेत्र में सूर्य मंदिर, कोटी शिवलिंग और विष्णु मंदिर में भव्य स्वागत समारोहों के साथ यात्रा का शुभारंभ हुआ।

दीपयज्ञ एवं पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ के माध्यम से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। विशाल नशा उन्मूलन रैली के साथ इसका समापन हुआ। यह अपनी तरह का पहला कार्यक्रम था, जिसमें लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लिया। शान्तिकुञ्ज की टोली और गायत्री चेतना केंद्र गुवाहाटी के कार्यकर्त्ताओं ने कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

ज्योति कलश रथ के पीछे चलते श्रद्धालु

यज्ञ शृंखला से गायत्रीमय हुई ब्रज क्षेत्र की तहसील मॉट

मिटठौली, मॉट, मथुरा। उत्तर प्रदेश

तहसील मॉट के गाँव मिटठौली में गत वर्ष 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ था। इस यज्ञ ने ग्रामवासियों को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने हर वर्ष ग्राम स्तर का सामूहिक गायत्री महायज्ञ करने का संकल्प लिया।

इस वर्ष 21 एवं 22 सितम्बर को 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। पहले दिन 12 घंटे का अखण्ड जप तथा शाम को 1008 दीपों का दीपयज्ञ हुआ। दूसरे दिन 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ से पहले पूरे गाँव के लिए सामूहिक श्राद्ध तर्पण का कार्यक्रम संपन्न कराया गया। गायत्री महायज्ञ में तहसीलदार प्रदीप अग्रवाल जी का आगमन हुआ तथा विशेष अतिथि के रूप में जिला अध्यक्ष श्री ओमवीर सिंह नौहवार जी एवं उनकी टीम का आगमन हुआ।

इस कार्यक्रम के आयोजन में विशेष भूमिका श्री राकेश प्रधान, श्री राजेश चौधरी मैनेजर एन. आर. आई. स्कूल), एडवोकेट मीरा चौधरी (जिला पदाधिकारी संघ), श्री करूआ सिंह, भारतीय किसान यूनियन के श्री हरेन्द्र चौधरी, श्री जयपाल सिंह, श्री उदयवीर चौधरी, श्री नरेन्द्र सिंह, श्री रामवीर सिंह, श्री धर्मपाल सिंह एवं श्री दिगम्बर सिंह सरपंच ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मिटठौली में यज्ञ संचालन करती आँवलखेड़ा की टोली

नावली में 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

मिटठौली में हुए यज्ञों से प्रभावित होकर नावली गाँव के श्री गोविन्द सिंह ने दिनांक 2 एवं 3 अक्टूबर 2024 को 1008 दीपों का दीपयज्ञ एवं 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न कराया। इसमें नावली, सामनता की गढ़ी एवं उसके आसपास के हजारों परिजनों ने भाग लिया। सभी ने अपने गाँव के सर्वांगीण विकास और राष्ट्रोत्थान की प्रार्थना के साथ आहुतियाँ समर्पित कीं।

सर्वपितृ अमावस्या के दिन सामूहिक श्राद्ध तर्पण का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें ग्रामवासियों ने बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लेते हुए अपने पितरों की तृप्ति, शान्ति, सद्गति की प्रार्थना की। प्रथम नवरात्र के निमित्त विशेष आहुतियाँ भी दी गईं।

आयोजन में मुख्य भूमिका श्री गोविन्द सिंह, श्री मंगलसिंह, श्री राजेश चौधरी एवं श्रीमती मीरा चौधरी (मिटठौली) की रही। श्री टीकम सिंह जी जिला संयोजक मथुरा एवं शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री इन्द्रजीत सिंह ने विशिष्ट सहयोग प्रदान किया।

दैवीय संरक्षण की अनुभूति

मिटठौली गाँव में सर्प काटने के लगभग 16 प्रकरण हो चुके थे। गायत्री यज्ञ में इस समस्या के निराकरण के लिए गाँववासियों ने सामूहिक प्रार्थना की, विशेष आहुतियाँ दीं, जिसका गाँव में सकारात्मक प्रभाव देखा जा रहा है।

उपासना सच्ची तभी है जब जीवन में ईश्वर घुल जाए।

सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या के दिन हुए विशाल संस्कार समारोह

अखिल विश्व गायत्री परिवार के अत्यंत सरल, सुगम विधि-विधान और उसके कर्मकाण्ड के तर्क, तथ्यपूर्ण प्रतिपादन ने अपनी सनातन संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित करने में बड़ा योगदान दिया है। इस परम्परा के प्रति लोगों की आस्था निरंतर बढ़ रही है। श्राद्ध पक्ष में '**तुम पितरों को श्रद्धा दो, वे तुम्हें शक्ति देंगे**' के भाव के साथ देश-विदेश में सामूहिक श्राद्ध, तर्पण संस्कार भी बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। प्रगतिशील विचारधारा और आडंबर रहित यह सामूहिक संस्कार अधिकांश शक्तिपीठों पर सम्पन्न होते हैं। बड़ी संख्या में इनके समाचार भी मिलते हैं। प्रज्ञा अभियान में स्थान की सीमा को देखते हुए उनमें से कुछ का अति संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत है।

पिस्काट वे, न्यू जर्सी। संयुक्त राज्य अमेरिका

गायत्री चेतना केन्द्र, पिस्काट वे में विगत 15 वर्षों से श्राद्ध पक्ष में सामूहिक तर्पण का कार्यक्रम आयोजित होता है। केन्द्र की ओर संस्कार की समस्त सामग्री सहित पूरी व्यवस्था निःशुल्क होती है। हर वर्ष सैकड़ों लोग इसका लाभ लेते हैं।

इस वर्ष सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या, 2 अक्टूबर की सायं आयोजित सामूहिक श्राद्ध के कार्यक्रम में हिन्दू समाज के विभिन्न समुदायों के लगभग 200 परिजनों ने भाग लेकर अपनी तीन पीढ़ी की दिवंगत आत्माओं को जलांजलि-श्रद्धांजलि अर्पित की। चेतना केन्द्र के श्री शंभु जी और श्री सुबोध जी ने संस्कार का कर्मकाण्ड सम्पन्न कराया।

1500 लोगों ने तर्पण किया

उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन में प्रतिदिन सामूहिक श्राद्ध, तर्पण संस्कार हुए, 1500 से अधिक लोगों ने इनमें भाग लेकर अपने पितरों की तृप्ति, तुष्टि, शान्ति की प्रार्थना की। सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या के दिन पाँच पारियों में 400 से अधिक लोगों ने भागीदारी की। हर वर्ष की तरह कर्मकाण्ड का संचालन मातृशक्ति ने किया। श्रीमती माधुरी सोलंकी एवं श्रीमती पंकज राजोरिया द्वारा कराए गए कर्मकाण्ड ने सभी को प्रभावित किया। श्राद्ध करने वाले महानुभावों ने अखाद्य का सेवन न करने, जूठन न छोड़ने, नशा न करने, गौ-संवर्धन और स्वच्छता में योगदान देने तथा समाज में सत्प्रवृत्तियों के प्रसार के लिए योगदान देने जैसे संकल्प लिए।

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ अलीराजपुर में 2 अक्टूबर को 70 परिजनों ने श्राद्ध, तर्पण संस्कार किया। श्री भूरसिंह भिण्डे और डॉ. प्रदीप कनेश ने सम्पूर्ण कर्मकाण्ड कराया और श्री संतोष वर्मा ने श्राद्ध, पिण्डदान आदि का महत्त्व समझाया।

गायत्री शक्तिपीठ जोबट में हुए संस्कार समारोह में जोबट, देहदला, कोस्डुना, भीलखेड़ी आदि ग्रामों से आए भाई-बहिनों ने अपने पितरों का श्राद्ध किया। अंत में सभी ने 9 कुण्डीय यज्ञ में भाग लिया। डोही नदी में पिण्ड विसर्जित किए गए।

रायपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ समता कॉलोनी में सर्व पितृमोक्ष अमावस्या के दिन 100 से अधिक भाई-बहिनों ने अपने दिवंगत पूर्वजों को श्रद्धा सुमन समर्पित किये। इस कार्यक्रम में महिलाओं और बच्चों ने भी भाग लेकर अपने पितरों को जलांजलि अर्पित की। परिव्राजक श्री नीलम सिन्हा एवं श्री तोरण सिन्हा ने कर्मकाण्ड सम्पन्न कराया।

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चित्तौड़गढ़ और आसपास के गाँवों से लोग अपने पितरों का श्राद्ध करने गायत्री शक्तिपीठ चित्तौड़गढ़ पहुँचे। श्री रमेशचंद्र पुरोहित के अनुसार सर्वपितृ अमावस्या के दिन लगभग 250 लोगों ने अपने पितरों को जलांजलि एवं पिण्डदान अर्पित किए।

बरघाट, सिवनी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बरघाट में सामूहिक श्राद्ध, तर्पण संस्कार के आयोजन में नगर एवं गाँवों के सैकड़ों भाइयों की भागीदारी रही। कार्यक्रम का संचालन श्री हेमराज बघेल ने किया।

अलवर। राजस्थान

जवाहर नगर अलवर के नये मंदिर परिसर में तथा गायत्री शक्तिपीठ करौली कुण्ड में सामूहिक तर्पण एवं यज्ञ के कार्यक्रम आयोजित हुए।

शक्तिपीठ पर साधना शिविरों का आयोजन

साधनात्मक मानसिकता में ढल रहे हैं श्रद्धालु

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ लंका, वाराणसी में युवा प्रकोष्ठ द्वारा मौन साधना एवं व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। आयोजकों ने बताया कि इन शिविरों के आयोजन का उद्देश्य लोगों को गायत्री उपासना, साधना का मर्म समझाकर शान्तिकुञ्ज में चलने वाले संजीवनी साधना सत्रों में भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। इसमें उपजोन के अंतर्गत सभी जिलों के श्रद्धालुओं एवं कार्यकर्त्ताओं को आमंत्रित किया जा रहा है।

21 एवं 22 सितम्बर को आयोजित 24वें शिविर में 15 से 45 वर्ष के बीच के स्वजनों ने भाग लिया। बीएचयू, वाराणसी, चंदौली, गाजीपुर से आए भाई-बहिन इसमें शामिल हुए। पारिवारिक आत्मीयता की अनुभूतियों के संग शिविर सम्पन्न हुआ। साधकों ने त्रिकाल साधना की। जीवन साधना के 24 स्वर्णिम सूत्रों पर विस्तृत चर्चा हुई। शान्तिकुञ्ज, संगठन, गायत्री, यज्ञ, गुरुवर, मिशन, मंडल आदि पर भी प्रकाश डाला गया।

विदाई समारोह में प्रशिक्षण मंडल से विद्याधर मिश्र, बृजेश पटेल, ओमेश्वर सेपट आदि वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने शिविरार्थियों को उनकी आध्यात्मिक प्रगति के लिए शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री चन्द्रशेखर जैन, विशाखापट्टनम। आंध्र प्रदेश

गायत्री परिवार विशाखपट्टनम के ट्रस्टी एवं सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री चन्द्रशेखर जैन का दिनांक 21 जुलाई 2024 को निधन हो गया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शशिकान्ता, पुत्र वेदान्त, पुत्र वधु नैन्सी एवं पौत्र प्रणव सभी मिशन के लिए समर्पित हैं।

श्री किशोर सिंह दसौंधी, पीथमपुर, धार। मध्य प्रदेश

अत्यंत प्राणवान वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता श्री किशोर सिंह दसौंधी का 102 वर्ष की आयु में देवलोक गमन हो गया। उनकी सेवा, सक्रियता ने सैकड़ों लोगों को गायत्री परिवार में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया है।

डॉ. नत्थूलाल थवाईत, बिलासपुर। छत्तीसगढ़

जशपुर जिले में गायत्री परिवार को सिंचित, पल्लवित करने वाले गायत्री के सिद्ध साधक एवं मिशन के प्राणवान कार्यकर्त्ता डॉ. नत्थूलाल थवाईत का दिनांक 30 सितम्बर 2024 को 93 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। वे भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी से शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए ताम्रपत्र प्राप्त व्याख्याता रहे।

श्री रामकृष्ण परिव्राजक, सैयदराजा, चंदौली। उत्तर प्रदेश

विगत 35 वर्षों से गायत्री शक्तिपीठ सैयदराजा पर सेवाएँ दे रहे परिव्राजक श्री रामकृष्ण जी का लगभग 60 वर्ष की उम्र में दिनांक 29 सितम्बर को देहावसान हो गया। उन्होंने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के जिला संयोजक के रूप में सेवाएँ दीं तथा ज्ञानयज्ञ के लिए भी उल्लेखनीय काम किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय समाचार

प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू हुए

गुजरात के राज्यपाल माननीय आचार्य देवव्रत जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी की उपस्थिति में हुआ एमओयू के दस्तावेजों का आदान-प्रदान

गुजरात प्राकृतिक खेती विज्ञान विश्वविद्यालय के साथ हुआ अनुबंध

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और गुजरात प्राकृतिक खेती विज्ञान विश्वविद्यालय के बीच 5 अक्टूबर को प्राकृतिक कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान, शिक्षा और नवाचार को बढ़ावा देने पर केन्द्रित एक महत्त्वपूर्ण अनुबंध हुआ। इस अनुबंध पत्र पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और जीएनएफएसयू के कुलपति डॉ. सी.के. तिम्बाडिया जी ने हस्ताक्षर किए। इसके अनुसार दोनों विश्वविद्यालय मिलकर ऐसी स्थायी कृषि परम्पराओं को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो पर्यावरण और समाज दोनों के लिए लाभकारी होंगी।

जॉर्जिया, अमेरिका के विश्वविद्यालय के साथ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज और संयुक्त राज्य अमेरिका के जॉर्जिया शहर में स्थित इंटरनेशनल ब्लैक सी यूनिवर्सिटी, टिबिलिसी के बीच मनोविज्ञान, भाषा अध्ययन, शिक्षा, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में शिक्षा और शोध कार्यों में परस्पर सहयोग प्रदान करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने तथा आईबीएसयू के वरिष्ठ पदाधिकारी डॉ. के. शेनेलिया ने इस महत्त्वपूर्ण अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।

यह साझेदारी नवाचार, शोध और पेशेवर विकास के नए अवसर प्रदान करने के साथ समाज के उत्थान में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देगी। दोनों विश्वविद्यालय संयुक्त शोध, पायलट परियोजनाओं और वैज्ञानिक आयोजनों पर सहयोग करेंगे। शैक्षणिक प्रकाशनों और संसाधनों का आदान-प्रदान किया जाएगा। इंटर्नशिप और प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु उपयुक्त कंपनियों और फर्मों की पहचान करने में भी परस्पर सहयोग किया जाएगा।

शान्तिकुञ्ज पधारे सुप्रसिद्ध गायक श्री हिमेश रेशमिया

सुप्रसिद्ध गायक, संगीतकार एवं अभिनेता श्री हिमेश रेशमिया सपरिवार शान्तिकुञ्ज आए। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उनका स्नेहपूर्वक स्वागत किया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की अद्वितीय शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को देख-समझकर वे गद्गद थे। उन्होंने देव संस्कृति विश्वविद्यालय को समाज और शिक्षा के क्षेत्र में प्रेरणादायक संस्थान बताया।

श्री हिमेश रेशमिया इस वर्ष फरवरी में मुंबई में आयोजित अश्वमेध महायज्ञ में भाग ले चुके हैं। यहाँ आकर उन्होंने अश्वमेध यज्ञ से जुड़ी स्वर्णिम स्मृतियों को ताजा किया।

प्रति कुलपति जी द्वारा श्री हिमेश रेशमिया एवं उनकी धर्मपत्नी का स्वागत तथा देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विविध प्रकल्पों का दिग्दर्शन

शक्ति साधना पर्व नवरात्र में आयोजित हुए प्रेरणाप्रद सामूहिक अनुष्ठान

नैमिषारण्य में प्रभात फेरी निकालते अनुष्ठान में शामिल साधक

गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर देवास में आरती करते साधक और यज्ञोपवीत संस्कार

अलीराजपुर में यज्ञ करते साधकगण

मुम्बई में बच्चों को दिये संस्कार और सुविचार

हटा में माँ गायत्री को अर्पित की 1100 मीटर लम्बी चूनर

श्रीराम साधना आरण्यक में विशेष साधन सत्र

24 लाख महामंत्र जप साधना महापुरश्चरण में भागीदारी

नैमिषारण्य, सीतापुर। उत्तर प्रदेश

श्रीराम साधना आरण्यक नैमिषारण्य में आश्विन नवरात्र अनुष्ठान साधना शिविर में 50 आवासीय एवं 50 से अधिक अन्य साधकों ने भाग लिया। उल्लेखनीय है कि यह विशेष नवरात्र साधना वहाँ चल रहे चौबीस लाख गायत्री महामंत्र जप साधना महापुरश्चरण के अंतर्गत की गई। इस शिविर में लखनऊ, सुल्तानपुर, गोरखपुर, हरदोई, सीतापुर, शाहजहाँपुर, बुलंदशहर और हापुड़ तक के भाई-बहिनों ने भागीदारी की। साधकों ने तीर्थ क्षेत्र में आने वाले श्रद्धालुओं के बीच ज्ञान यज्ञ प्रभात फेरी निकाल कर गुरुदेव का साहित्य वितरित किया।

अतःकरण की दुष्प्रवृत्तियों से लड़ने की प्रेरणा दी

केवलारी, सिवनी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ केवलारी में सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के भाव के साथ नौ दिवसीय नवरात्र साधना अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञाचार्य श्री शिवराज राहंगडाले ने श्रीमद्भग्वद्गीता में अर्जुन के विषाद और भगवान श्रीकृष्ण की प्रेरणाओं के आधार पर साधक, श्रद्धालुओं से अपने भीतर के व्यसन, दुर्गुणों को समाप्त करने की साधना के लिए तत्पर होने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि आज का किंकर्त्तव्यविमूढ़ इंसान अपने अंदर की बुराइयाँ द्वेष, ईर्ष्या, फिजूल खर्ची, कुसंस्कार, नशा, मोह, लोभ, अहंकार आदि से लड़ने से साफ मना कर रहा है, यह सोचनीय है।

शक्तिपीठ में युग निर्माण सत्संकल्प को बिना देखे बोलने की प्रतियोगिता आयोजित की गई। अंतिम दिन ऋतु प्रसाद, और ऋषि प्रसाद (साहित्य) और महाप्रसाद (भोजन) का कार्यक्रम रखा गया था।

विशिष्ट गणमान्यों के प्रेरक वचन

खरगोन। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ खरगोन में आयोजित गायत्री साधना अनुष्ठान के चौथे दिन स्थानीय विधायक श्री बालकृष्ण पाटीदार की मुख्य उपस्थिति में सामूहिक 11 कुंडीय यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पाँच गर्भ संस्कार, दो नामकरण, दो अन्नप्राशन और एक जन्मदिन संस्कार कराए गए।

यज्ञ संचालक बहिनों ने यज्ञ की सामर्थ्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मनुष्य के अंतःकरण को भी बदलने की सामर्थ्य यज्ञ की ऊर्जा में है। यज्ञाग्नि की साक्षी में जिस बालक का संस्कार होता है उन बालकों का जीवन दिव्य बनता जाता है।

विधायक श्री बालकृष्ण पाटीदार ने कहा कि संस्कारों की पुण्य परंपरा ऋषि मुनियों की देन है। यह निरंतर गतिशील रहनी चाहिए।

नवरात्र के अंतिम दिन जिला जेल अधीक्षक श्री विद्याभूषण प्रसाद की मुख्य उपस्थिति में शस्त्र पूजन का कार्यक्रम रखा गया था। उन्होंने कहा कि ऐसे सामूहिक आयोजनों से सामाजिक चेतना का जागरण होता है जो समाज को संगठित व सशक्त बनाता है। वर्तमान समय में सनातन संस्कृति पर जो खतरा मंडरा रहा है, उससे रक्षा करने में इस तरह के सामूहिक यज्ञ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

> संस्कारों की पुण्य परंपरा गतिशील रहे।
> – श्री बालकृष्ण पाटीदार, विधायक
> सामूहिक कार्यक्रम से सामूहिक चेतना का जागरण होता है।
> –श्री प्रसाद, जिला जेल अधीक्षक

इस अवसर पर उपस्थित विशेष अतिथि जिला वन मंडल अधिकारी श्री रमेश चंद्र राठौर तथा नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती छाया जोशी ने भी गायत्री साधना एवं यज्ञ के लाभों की चर्चा की।

ज्योति कलश यात्रा से जुड़े दायित्व बताये

हर परिजन दो पंचायतों में मिशन के विचारों को पहुँचाये

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर पर शारदीय नवरात्र महापर्व के शुभ अवसर पर सम्पन्न हुए सामूहिक गायत्री महामंत्र जप के नव दिवसीय अनुष्ठान में सैकड़ों श्रद्धालुओं की भागीदारी रही। महानवमी के दिन पंच कुण्डीय महायज्ञ के साथ साधकों ने अपने अनुष्ठान की पूर्णाहुति की।

शक्तिपीठ के मीडिया प्रभारी श्री विक्रमसिंह चौधरी ने बताया कि पूर्णाहुति के समय सभी श्रद्धालुओं को अपने बच्चों को सद्गुणी एवं संस्कारवान बनाने के लिए प्रेरित किया गया। अनेक बच्चों के विभिन्न संस्कार हुए। इस अवसर पर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के जिला संयोजक श्री देवीशंकर तिवारी ने सभी से अपने बच्चों को आगामी 9 नवम्बर को होने जा रही भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल कराने का निवेदन किया।

युवा प्रकोष्ठ जिला समन्वयक प्रमोद निहाले ने आगामी दिनों मध्य प्रदेश में सम्पन्न होने जा रही ज्योति कलश यात्रा के परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक परिजन को कम से कम दो पंचायतों में मिशन की विचार धारा को पहुँचाने का लक्ष्य दिया।

गायत्री माता को अर्पित की 1100 मीटर की चूनर

हटा, दमोह। मध्य प्रदेश : अलग-अलग क्षेत्रों में पर्व आयोजन एवं देव शक्तियों के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति की अलग-अलग परम्पराएँ हैं। गायत्री परिवार की हटा शाखा से जुड़े श्रद्धालुओं ने स्थानीय मान्यताओं के अनुरूप नवरात्र पर्व पर चुनरी यात्रा निकाली, जिसमें नगर के हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। सबने मिलकर श्री वेदमाता गायत्री को 1100 मीटर लम्बी चूनर अर्पित की।

यह यात्रा नवरात्र की पंचमी के दिन निकाली गई। शिवशक्ति दुर्गा मंदिर से चुनरी का विशेष पूजन कर सुश्री उमा देवी खटीक, विधायक हटा ने इसका शुभारंभ किया धार्मिक गीतों और माँ के जयकारों के साथ यात्रा गायत्री शक्तिपीठ पहुँची। गायत्री शक्तिपीठ में माँ गायत्री, माँ दुर्गा देवी एवं माँ सावित्री को प्रबंधक डॉ. विजय सिंह राजपूत द्वारा 1100 मीटर की चुनरी अर्पित की गई । इस अवसर पर प्रज्ञापुत्र डॉ. सी एल नेमा ने चुनरी यात्रा के महत्व पर प्रकाश डाला। चुनरी यात्रा का समापन 1111 दीपकों द्वारा महाआरती के साथ हुआ।

जीवन में यज्ञभाव के समावेश की प्रेरणा दी

मुम्बई। महाराष्ट्र

टीम दिया, मुम्बई ने नवरात्र पर्व के उपलक्ष्य में 6 अक्टूबर को नेप्च्यून कलरस्केप कॉम्प्लेक्स, मुलुंड पश्चिम में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया। नवरात्र की नौ देवियों के रूप में नौ देवकन्याओं को इस यज्ञ का प्रमुख यजमान बनाया गया था। 86 वर्षीया परदादी और उनकी परपोती सहित कई पीढ़ियों के श्रद्धालुओं ने यज्ञ में भाग लिया।

यज्ञ में श्रद्धालुओं को बलिवैश्व देवयज्ञ के माध्यम से दैनंदिन जीवन में यज्ञभाव को पुष्ट करने की प्रेरणाएँ दी गईं। अलग-अलग भाषाओं में श्रद्धालुओं में अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ वितरित की गईं। साधकों को गायत्री चालीसा पाठ और गायत्री मंत्र लेखन के लिए प्रोत्साहित किया गया।

गायत्री स्पंदन कार्यक्रम

6 अक्टूबर को ही अणुशक्ति नगर की नीलगिरि बिल्डिंग में दिया, मुम्बई के श्री हितेश जोशी ने 'गायत्री स्पंदन' कार्यक्रम का आयोजन किया। उन्होंने लोगों को गायत्री साधना के प्रभाव और लाभ की जानकारी दी। सभी प्रतिभागियों को प्रसाद के रूप में युगसाहित्य एवं गायत्री चालीसा का वितरण किया गया।

बच्चों और युवाओं को बताया यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान

इंदौर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ केशर बाग में मनाए गए नवरात्र साधना पर्व ने सैकड़ों श्रद्धालुओं में भक्तिभाव का संचार किया। महानवमी के दिन 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति हुई। इस कार्यक्रम में युवाओं और बच्चों की उल्लेखनीय भागीदारी रही। उन्हें यज्ञ के ज्ञान-विज्ञान की जानकारी दी गई।

पूरी शक्तिपीठ बनी यज्ञशाला

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

नवरात्र साधना के समय जोबट में पूरी शक्तिपीठ यज्ञशाला में बदल गई। प्रतिदिन 17 कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं विभिन्न संस्कार होते रहे, तीन पारियों में 400 से अधिक भाई-बहिनों ने आहुतियाँ दीं। दशहरा पर्व पर शस्त्र पूजन का कार्यक्रम भी रखा गया था। नौ दिवसीय कार्यक्रम में नगर के सभी समाज के भाई-बहिनों का तन, मन एवं धन से भरपूर सहयोग रहा है।

दिनभर आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत रहा शक्तिपीठ का वातावरण

खिलचीपुर, राजगढ़। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर में नवरात्र के नौ दिनों में जीवन साधना तथा श्रद्धा संवर्धन के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रतिदिन गायत्री महामंत्र जप और पंच कुण्डीय यज्ञ के अलावा ध्यान साधना, सस्वर गायत्री चालीसा पाठ, सत्संकल्प पाठ आदि कार्यक्रम हुए। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री कन्हैयालाल शर्मा ने बताया कि अनेक श्रद्धालुओं ने अपने बच्चों के यज्ञोपवीत, नामकरण, मुण्डन, विद्यारंभ आदि संस्कार कराए। दिनभर शक्तिपीठ का वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत रहा।

शारदीय नवरात्र पर्व पर जप, तप, यज्ञ के साथ नौ दिवसीय अनुष्ठान सम्पन्न

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ अलीराजपुर पर शारदीय नवरात्र पर्व के विविध साधनात्मक कार्यक्रमों में लगभग 400 साधकों ने प्रतिदिन भाग लिया। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री संतोष वर्मा के अनुसार श्रद्धालुओं ने शक्तिपीठ पर रहकर चौबीस हजार गायत्री मंत्र का जप एवं चौबीस सौ गायत्री मंत्र लेखन, गायत्री चालीसा का पाठ के अनुष्ठान किये। प्रतिदिन संस्कार भी बड़ी संख्या में हुए। पूर्णाहुति के दिन कन्याभोज कराकर शक्तिस्वरूपा मातृशक्ति के प्रति अपना सम्मान एवं भक्तिभाव व्यक्त किया गया।

जैसा आपका मन होगा, जीवन का निर्माण भी उसी प्रकार होगा।

राजस्थान और दिल्ली में नवसृजन के संकल्प उभारते विशाल सम्मेलन

वेदमाता गायत्री और प्रज्ञेश्वर महादेव की प्राण प्रतिष्ठा

15000 कलशों की शोभायात्रा, गायत्रीमय हो गया कालवाड़

कालवाड़ नगर में निकली विराट कलश यात्रा और धर्म ध्वजारोहण करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

कालवाड़, जयपुर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ कालवाड़ में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ वेदमाता गायत्री और प्रज्ञेश्वर महादेव की प्राण प्रतिष्ठा हुई। कालवाड़ वासियों पर पावन गुरुसत्ता की विशेष कृपा हुई, शक्तिपीठ का लोकार्पण करने शान्तिकुञ्ज से युवा युगनायक डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी पहुँचे। उन्होंने कलश यात्रा के शक्तिपीठ में पहुँचने पर विशाल जनमेदिनी को सच्ची भगवद्भक्ति और युगधर्म का बोध कराया। उन्होंने कहा कि श्रद्धा, समर्पण और विश्वास से कोई भी व्यक्ति भगवान और गुरु की कृपा को सहज ही प्राप्त कर सकता है।

“श्रद्धा, विश्वास अडिग रखें, सद्गुरु और भगवान सहज ही मिल जाएँगे।” - आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

देसंविवि के प्रति कुलपति आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि हर व्यक्ति के जीवन में संकट आते हैं। भक्त और शिष्य का विश्वास संकट में भी डगमगाना नहीं चाहिए। हमें हमेशा श्रेष्ठ कर्म करते रहना चाहिए और मन में यह विश्वास रखना चाहिए कि भगवान रूपी सीसी कैमरे की नजर हमारे ऊपर चौबीसों घंटे बनी हुई है।

इस विराट कलश यात्रा का शुभारंभ 30 सितम्बर को 15000 महिलाओं की भव्य कलश यात्रा के साथ हुआ। देवताओं, महापुरुषों सहित कई आकर्षक झाँकियों के साथ तीन स्थानों से आरंभ हुई इस अभूतपूर्व शोभायात्रा से पूरा कालवाड़ गायत्रीमय हो गया। इस यात्रा ने नशामुक्ति, कुरीति उन्मूलन का बड़ा प्रभावशाली संदेश नगरवासियों को दिया। कलश यात्रा देखकर नगरवासी भावविभोर थे। उन्होंने जगह-जगह पूरी यात्रा पर पुष्पवर्षा की। कालवाड़ की मस्जिद से मुस्लिम समुदाय के लोगों ने पुष्प वर्षा कर कलश शोभायात्रा का स्वागत किया। मुस्लिम युवाओं ने फल भी वितरित किए।

शान्तिकुञ्ज से आई श्री शशिकांत सिंह की टोली ने कार्यक्रम सम्पन्न कराया। श्रीमती गायत्री कचोलिया ने अपने ओजस्वी प्रज्ञा गीतों से श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।

आरंभ में राजस्थान जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री गौरीशंकर सैनी, राजस्थान जोन समन्वयक श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, श्री सतीश भाटी, डॉ. प्रशांत भारद्वाज, कालवाड़ शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी श्री धर्मसिंह राजावत, कालवाड़ गाँव के सरपंच श्री त्रिवेंद्र सिंह ने आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का राजस्थानी साफा पहनाकर और तलवार भेंट कर अभिनंदन किया।

गायत्री महायज्ञ में कैबिनेट मंत्री राजवर्धन सिंह जी की धर्मपत्नी गायत्री जी और गायत्री कटारिया जी ने भी पूरी श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ आहुतियाँ अर्पित कीं।

समाज को नई दिशा देने के लिए आगे आएँ

108 कुण्डीय महायज्ञ एवं प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा का लोकार्पण समारोह

सादुलपुर, चुरू। राजस्थान

युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 29 सितम्बर 2024 को गायत्री शक्तिपीठ सादुलपुर में ‘प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा’ का लोकार्पण किया। यह लोकार्पण समारोह 29 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक की तिथियों में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ।

विशाल जनसभा को संबोधित करते एवं गुरुस्मारक ‘प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा’ का पूजन व लोकार्पण करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कलश यात्रा के उपरांत शक्तिपीठ प्रांगण में उपस्थित श्रद्धालुओं के समक्ष वर्तमान युग में गायत्री और यज्ञ की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज पर्यावरण ही प्रदूषित नहीं है, अपितु सूक्ष्म वातावरण भी दूषित है। यह गायत्री महायज्ञ वातावरण को शुद्ध करके समाज को कल्याण के मार्ग पर प्रेरित करेगा। उन्होंने कहा कि समाज गलत दिशा में जा रहा है, भगवान पुकार रहे हैं, यदि आपके पास भावना है तो समाज को नई दिशा देने के लिए आगे आएँ।

108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से श्री परमानन्द द्विवेदी की टोली पहुँची थी। मुख्य ट्रस्टी श्री जयसिंह कसवां द्वारा आभार ज्ञापन के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

6 जिलों के कार्यकर्त्ताओं का विशाल सम्मेलन

विचार क्रान्ति इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। - डॉ. चिन्मय जी

रतनगढ़, चुरू। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ रतनगढ़ में 30 सितंबर 2024 को प्रबुद्ध वर्ग संगोष्ठी का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से सत्प्रेरणाएँ प्राप्त करने के लिए स्थानीय लोगों में गजब का उत्साह था। गंगानगर, सूरतगढ़, हनुमानगढ़ आदि 6 जिलों से दो-तीन सौ कि.मी. दूरी तय कर लगभग 2000 कार्यकर्त्ता आए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अत्यंत मार्मिक दृष्टातों के माध्यम से मानव जीवन का उद्देश्य और उसकी सफलता, सार्थकता के सूत्रों की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि ईश्वर का राजकुमार अपने पिता की विरासत को सँभालकर ही सबसे ज्यादा सुखी और संतुष्ट होता है। विचार क्रान्ति आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है और हम सबको पूरी निष्ठा के साथ भगवान के इस कार्य में भागीदारी करनी चाहिए।

स्वागत में पलक पाँवड़े बिछाये विशाल बाइक रैली निकाली

गोष्ठी के लिए कार्यकर्त्ताओं ने शानदार वातावरण तैयार किया था। उन्होंने संगोष्ठी की पूर्व संध्या-भाईजी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी की जयन्ती पर 170 बाइकों की रैली निकालकर पूरे नगर का वातावरण आध्यात्मिक बना दिया था। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के स्वागत में एक कि.मी. पहले ही 50 वाहनों का विशाल काफिला उपस्थित था। राजस्थान के पूर्व खनिज एवं पर्यावरण मंत्री श्री राजकुमार रिणवा एवं नगर पालिका की अध्यक्ष श्रीमती अर्चना शर्मा ने उनका साफा एवं माला पहनाकर स्वागत किया। गायत्री परिवार के चूरू उपजोन समन्वयक श्री बालदान चारण, नागौर के जिला अधिकारी श्री सतीश कौशिक और प्रायः सभी प्रमुख कार्यकर्त्ता कार्यक्रम में उपस्थित थे।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का नवसृजन संकल्प समारोह

मनुष्य जीवन का उपयोग समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए होना चाहिए। - आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

ग्रेटर नोएडा। रा.रा.क्षेत्र

ग्रेटर नोएडा के जीएल बजाज इंस्टीट्यूट में गायत्री परिवार ने नवसृजन संकल्प समारोह आयोजित किया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इसे संबोधित किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग आए, इसे देखते हुए हॉल के बाहर भी लोगों के लिए बड़ी स्क्रीन लगाई गई थी।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि मनुष्य जीवन परमात्मा का अनमोल उपहार है, जिसका सदुपयोग समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए। लाखों लोगों में कोई एक गुरुदेव या स्वामी विवेकानंद बनता है, क्योंकि वे लक्ष्यपूर्ण और संकल्पित जीवन जीते हैं।

जीवन की असली सार्थकता दूसरों की सेवा और समाज के कल्याण में निहित है। मनुष्य अपने जीवन को अमीरी या गरीबी के आधार पर सफल मान लेता है, जबकि जीवन की असली सफलता एक संतुष्टिपूर्ण जीवनशैली में है। जो व्यक्ति दूसरों के चेहरे पर मुस्कान लाता है, उसके चेहरे पर कभी दुःख नहीं आ सकता।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी उत्तर प्रदेश होम गार्ड्स और नागरिक सुरक्षा मंत्री श्री धर्मवीर प्रजापति को सम्मानित करते हुए

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश होम गार्ड्स और नागरिक सुरक्षा मंत्री श्री धर्मवीर प्रजापति उपस्थित रहे। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन पर चिंता व्यक्त की और अगली पीढ़ी के लिए जल और हवा को संरक्षित रखने की आवश्यकता पर बल दिया।

शूरवीरों का अभिनंदन

समारोह में दिल्ली-एनसीआर से आए कई भूतपूर्व सैनिकों और वीर सपूतों के परिवारों को सम्मानित किया गया। दिया टीम समन्वयक नीटू राघव ने सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया। इस आयोजन में गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा के व्यवस्थापक श्री बालरूप शर्मा एवं हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एनसीआर जोन के कार्यकर्त्ताओं और गणमान्यों को संबोधित करते हुए

विजयादशमी पर देसंविवि में रामलीला का मंचन

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि रोम-रोम में समाए राम को जगाने तथा अंतर्निहित आसुरी वृत्तियों पर विजय पाने की प्रेरणा है विजयादशमी का पर्व

मृत्युंजय सभागार में आशीर्वचन देते श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, रामलीला का मार्मिक मंचन और मैदान में रावण के पुतले का दहन

शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने असत्य पर सत्य की विजय, असुरता पर देवत्व की विजय, अनीति पर नीति की विजय का संदेश देता विजयादशमी पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। 30 फीट ऊँचे रावण के दहन का भव्य कार्यक्रम देव संस्कृति विश्वविद्यालय के बास्केट बॉल मैदान में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मेले जैसा वातावरण था। तरह-तरह के व्यंजनों के स्टॉल लगाए गए। रावण दहन स्थल में उपस्थित लगभग 5000 लोगों ने इन स्वादिष्ट पकवानों का लुत्फ उठाया।

रावण दहन से पूर्व कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में देसंविवि के मृत्युंजय सभागार में आकर्षक रामलीला का मंचन किया गया। उल्लेखनीय है कि इस रामलीला का मंचन विद्यार्थियों ने नहीं, बल्कि विश्वविद्यालय के स्टाफ द्वारा किया गया था। कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन, लेखा विभाग प्रभारी श्री जगदीश कुल्मी, डॉ. देवाशीष गिरी, श्रीमती दीपिका गिरी, अचल वशिष्ठ, सूर्यनाथ यादव, नीलमणि, उमेश, डॉ. रुचि सिंह, प्रवीण, आलोक पाण्डेय आदि कलाकारों के अभिनय को दर्शकों ने बहुत सराहा। पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँजता रहा।

श्रद्धेय कुलाधिपति जी ने अपने आशीर्वचन में कलाकारों के उत्साह और अभिनय की सराहना की। उन्होंने कहा कि दशहरा पर्व हमें अपने भीतर की आसुरी वृत्तियों पर विजय प्राप्त कर रोम-रोम में समाए राम को जगाने की प्रेरणा देता है। हर व्यक्ति को अपनी हीन वृत्तियों पर विजय पाने की साधना करनी चाहिए।

सुमति देती है गायत्री उपासना

''जहाँ सुमति है, वहीं सत्प्रवृत्तियाँ होती हैं। जहाँ कुमति है वहाँ तरह-तरह की विपत्तियाँ उत्पन्न होती हैं। भगवान राम के अनुयायियों को गायत्री उपासना करनी चाहिए, क्योंकि गायत्री उपासना सुमति प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है।''

– श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

गुजरात के राज्यपाल माननीय आचार्य देवव्रत जी ने कहा

यज्ञ ही मानव को मानव बनाने का मार्ग है

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में व्याख्यानमाला

व्यसनमुक्त भारत के निर्माण के लिए संकल्प दिलाए गए।
माननीय राज्यपाल ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने का आह्वान किया।

महान वह होता है जो दूसरों को अपना बना लेता है और स्वयं भी उनका हो जाता है। भारतीय संस्कृति की यही पहचान है।

गुजरात के राज्यपाल माननीय आचार्य देवव्रत जी ने 4 अक्टूबर को देसंविवि. में मृत्युंजय सभागार में आयोजित व्याख्यानमाला में इन भावों की अभिव्यक्ति के साथ भारतीय संस्कृति की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि, मुख्य वक्ता के रूप में सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के विचार और गायत्री परिवार के कार्यों की सराहना की व कहा कि इससे संस्कारवान व विकसित भारत का सपना पूरा किया जा सकता है।

माननीय आचार्य जी ने यज्ञ को एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन और श्रेष्ठतम कर्म बताया। उन्होंने कहा कि मानव को मानव बनाने का मार्ग भी यज्ञ ही है।

> हमें राष्ट्रसेवा के लिए अपनी बलिदान की परंपरा निभानी होगी।
> – डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

इससे पूर्व देसंविवि के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि भारत जागरण की प्रतीक्षा कर रहा है, इसके लिए हम सभी को जागना होगा। मानवता की रक्षा के लिए बलिदान की हमारी परम्परा रही है। हमें इस महान परम्परा पर चलते हुए राष्ट्र की सेवा करनी है।

इस सभा में सभी ने व्यसनमुक्त भारत के निर्माण तथा सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए सामूहिक संकल्प लिए।

माननीय राज्यपाल महोदय स्वयं जमीन से जुड़े एक किसान हैं। उन्होंने पूरे देश में प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत कार्य किया है। इस सभा में भी उन्होंने विद्यार्थियों को प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों के प्रश्नों का जवाब दिया।

विजेताओं का सम्मान

इस कार्यक्रम में देसंविवि में आयोजित श्रीराम शर्मा आचार्य रचित काव्य प्रतियोगिता के विजेता, क्रमशः शिवानी कपिराज, वर्णिका आर्य और विजय धनौला को माननीय राज्यपाल महोदय ने प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया।

विविध प्रकल्पों का निरीक्षण

गुजरात के राज्यपाल श्री देवव्रत आचार्य जी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती दर्शना देवी के साथ आए थे। देसंविवि में माननीय प्रति कुलपति जी ने पुष्पगुच्छ भेंटकर उनका स्वागत किया। उन्हें बाल्टिक सेंटर, स्वावलंबन कार्यशाला आदि प्रकल्पों का दिग्दर्शन कराया गया।

व्याख्यान सभा में गुजरात प्राकृतिक खेती विज्ञान विश्वविद्यालय, गुजरात के कुलपति डॉ. सी.के. टिम्बालिया आदि अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

हजारों लोगों ने किया नवरात्र साधना अनुष्ठान

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में नियमित चलने वाले नौ दिवसीय जीवन साधना सत्रों के अंतर्गत प्रस्तुत नवरात्र साधना सत्र में देश-विदेश से आए 1200 से अधिक साधकों ने विशिष्ट वातावरण एवं वरिष्ठ वक्ताओं की प्रेरणाओं का लाभ लेते हुए गायत्री साधना अनुष्ठान किए। शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता तथा देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने भी आत्म-परिष्कार एवं आत्मोत्थान की प्रार्थना के साथ विशिष्ट साधनाएँ कीं। शान्तिकुञ्ज में प्रतिदिन 27 कुण्डीय यज्ञशाला के अतिरिक्त यज्ञ कुण्डों की व्यवस्था की गई, जबकि पूर्णाहुति के दिन देव संस्कृति विश्वविद्यालय में भी 24 कुण्डीय यज्ञ हुआ। इन दिनों विविध संस्कार भी बड़ी संख्या में सम्पन्न हुए।

गीता का उपदेश-सार एवं गीता की महिमा

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, गीताज्ञान के मर्मज्ञ श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी विगत 20 से अधिक वर्षों से प्रत्येक नवरात्र में विशेष उद्बोधन देते हैं। प्रस्तुत नवरात्र में उन्होंने **'गीता का उपदेश-सार एवं गीता की महिमा'** विषय से आत्म-परिष्कार में उपयोगी बड़े मार्मिक और व्यावहारिक सूत्रों की व्याख्या की। प्रस्तुत हैं कुछ मार्मिक उद्गार :-

गीता महात्म्य

श्रीमद्भगवद्गीता एक रहस्यमय ग्रंथ है। गीता को सारे उपनिषदों का सार माना गया है। यह गूढ़ ज्ञान केवल सच्चे साधकों-भक्तों के लिए है। इसका वाचन प्रेम और भक्ति के वातावरण में ही होना चाहिए। जो इसका सही अर्थ समझते हैं, उनके पिछले कई जन्मों के पापों का क्षरण हो जाता है और जीवन सफल हो जाता है।

गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि अच्छे कर्म, व्यवहार और भाव से साधक का व्यक्तित्व निखरता है और ऐसे व्यक्तित्ववान साधक ही भगवान को प्रिय होते हैं।

अहंकार का विसर्जन होता है

अपने मन को सदैव भगवान में और भगवान के कार्यों में लगाओ। जिस तरह से अर्जुन ने अपना सब कुछ भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित कर दिया था, उसी प्रकार अपने अहंकार को अपने इष्ट में समर्पित करने का नाम साधना है। मीरा, बुद्ध, प्रह्लाद जैसे अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने अपना सब कुछ भगवद्अर्पण कर दिया था।

भगवान हमारे हृदय से बोलते हैं। भगवान की यह आवाज तभी सुनाई देगी, जब अहंकार का विसर्जन होगा। साधना से अहंकार गलता है और इससे हमारे कर्मों में सात्विकता आती है। चित्त की मलिनता दूर होती है। साधना से साधक में आध्यात्मिक शक्तियों का जागरण होता है।

अपना कमण्डल धो लीजिए

परमात्मा का प्रेम उन्हीं को मिलता है, जो बालक की तरह सरल हो, निर्दोष, निच्छल और शुद्ध आचरण करता हो। साधना से शरीर, मन और हृदय रूपी कमण्डल को धोना चाहिए। जब तक मन में मैल रहेगा, तब तक साधना सफल नहीं होगी। गहन तपश्चर्या से ही साधक को शक्ति प्राप्ति होती है। साधक की साधना जैसी होगी, सद्गुरु उसी के अनुरूप शक्ति प्रदान करते हैं।

गायत्री महामंत्र जप और साधना

नवरात्र साधना में गायत्री महामंत्र के जप को विशेष महत्त्व दिया गया है। गायत्री महामंत्र के जप के साथ स्वाध्याय-सत्संग का भी महत्त्व है। महामंत्र का जप मन को पवित्र बनाता है एवं सत्साहित्य के स्वाध्याय से विचार शुद्ध होते हैं।

साधना ऐसी हो, जिसमें सघनता, समर्पण व शुद्धता हो। साधना में जितनी सघनता होगी, इष्ट की कृपा, उनके आशीष-अनुदान उसी के अनुरूप मिलते हैं। श्रद्धावान साधक दूसरों के सद्गुणों को ग्रहण करता है।

माननीय आचार्य देवव्रत जी ने लिया आशीर्वाद

माननीय श्री देवव्रत आचार्य जी ने अपनी सहधर्मिणी सहित शान्तिकुञ्ज आकर अखण्ड दीप के दर्शन किए तथा ऋषियुग्म के पावन स्मारकों पर श्रद्धा सुमन समर्पित किए। आदरणीया शैल जीजी ने उनका मंगल तिलक कर एवं युगसाहित्य भेंट कर भावभरा स्वागत किया। मानवता के कल्याण के विषयों पर परस्पर विचारों का आदान-प्रदान हुआ।

मान. श्री देवव्रत आचार्य जी श्रद्धेया जीजी से आशीर्वाद लेते हुए एवं देसंविवि में गौसेवा करते हुए

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 27.10.2024
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26